REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2022

''प्रबंन्ध के सिद्धान्तों का अध्ययन''

डॉ.राजू रैदास[1],डॉ.चन्द्रकला अरमोती[2]
[1]शोधार्थी – डी–लिट (वाणिज्य), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,रीवा (म0प्र0) भारत.
[2]सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय मण्डला (म0प्र0) भारत.

प्रस्तावना :–

प्रबंध का सिद्धांत निर्णय लेने एवं व्यवहार के लिए व्यापक एवं सामान्य मार्गदर्शक होता है। उदाहरण के लिए माना कि एक कर्मचारी की पदोन्नति के संबंध में निर्णय लेना है तो एक प्रबंधक वरीयता को ध्यान में रखना चाहता है तो दूसरा योग्यता के सिद्धांत पर चलना चाहता है।

प्रबंध के सिद्धांत से क्या आशय :–

आज कल व्यवसाय का स्वरूप बडा हो गया है जिसके कारण प्रबंधक के सामने अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही है इसलिए इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रबंधक को मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है प्रबंध के सिद्धांत प्रबंधक को मार्गदर्शन प्रदान करते है और उसको व्यवसाय के संचालन में सहायता प्रदान करते है। इसके लिए फ्रान्स के प्रसिद्ध उद्योगपति हेनरी फेयोल जिन्हे आधारभूत प्रशासनिक सिद्धांतों का जनक कहा जाता है ने अपनी पुस्तक जनरल एवं उद्यौगिक प्रबंध में 14 सिद्धांतों का वर्णन किया है साथ ही वैज्ञानिक प्रबंध के जनक माने जाने वाले एफ. डब्लू. टेलर ने 04 सिद्धांतों का वर्णन किया ये सभी सिद्धांत अवलोकन एवं प्रयोगात्मक अध्ययन के आधार पर तैयार किये गये हैं। इन सभी सिद्धांतों की जानकारी सभी प्रबंधकों को होना बहुत जरूरी है।

प्रबंध के सिद्धांतों से तात्पर्य उन आधारभूत सत्य से है जो प्रबंधकों के कार्य को कुशलता पूर्वक पूरा करने में मार्गदर्शन करते है।

प्रबंध के सिद्धांत की विशेषताएं :–

प्रबंध के सिद्धांतों को लागू करने से पहले उनकी विशेषताओं के बारे में समझना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा यह अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। प्रबंध के सिद्धांत की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

1. **मानवीय व्यवहार से प्रभावित :–** प्रबंध के सिद्धांतों का सीधा संबंध मनुष्य से होता है।इसके अंतर्गत मूल रूप से मानव का प्रबंध किया जाता है। अतः प्रबंध के सिद्धांत मानवीय व्यवहार से प्रभावित होते हैं और यह इसकी अहम् विशेषता होती है।
2. **सिद्धांत नियमों से अलग होते हैं :–** प्रबंध के सिद्धांत कार्य एवं विचारों का मार्गदर्शन करते हैं जबकि नियम कार्यों को रोकने की रीति बताते हैं। नियम द्वारा बताई रिति का पालन ना करने पर दंड भोगना पड़ता है किंतु सिद्धांत के तोड़ने पर दंड की पसीधा व्यवस्था नहीं होती हैं।
3. **सिद्धांत नीतियों से अलग होते हैं :–** प्रबंध के सिद्धांत अनुभव, शोध एवं परीक्षण के आधार पर निर्धारित कार्य एवं विचारों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते हैं जबकि नीतियां किसी संस्था द्वारा निर्धारित मार्गदर्शक हैं। जिनके आधार पर संस्था में निर्णय लिए जाते हैं।

नीतियां सिद्धांतों के आधार पर निर्धारित की जाती है । इस प्रकार से प्रबंध के सिद्धांत एवं नीतियों में आधारभूत अंतर पाया जाता हैं।

प्रबंध के सिद्धांत की प्रकृति :–

1. **सर्व प्रयुक्त :–** ये सार्वभौमिक होते हैं क्योंकि इन्हें सभी प्रकार क संगठनों में प्रयोग किया जाता है।
2. **सामान्य मार्गदर्शन :–** ये कार्य करने के लिए दिशा निर्देश होते हैं, परन्तु ये पूर्वनिर्मित समाधान नहीं बताते हैं क्योंकि वास्तविक व्यावसायिक स्थितियाँ जटिल एवं गत्यात्मक होती हैं।
3. **व्यवहार एवं शोध द्वारा निर्मित :–** ये सिद्धांत अनुभवों एवं तथ्यों के अवलोकन के आधार पर विकसित किए जाते हैं।
4. **लोचशील :–** ये लोचशील होते हैं जिन्हें परिस्थितियों के अनुरूप संशोधित करके प्रयोग किया जा सकता है।
5. **मुख्यतः व्यवहारिक :–** इनकी प्रकृति मुख्य रूप से व्यावहारिक होती है क्योंकि इनका उद्देश्य प्राणियों के जटिल व्यवहार को प्रभावित करना होता है।
6. **कारण एवं परिणाम का संबंध :–** इनके द्वारा कारण एवं प्रभाव में सम्बन्ध स्थापित किया जाता है तथा ये निर्णयों के परिणामों को बताते हैं।

हेनरी फेयोल के प्रबंध के सिद्धांत :–

हेनरी फेयोल (1841–1925) ने खान इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर एक कोयला खान कम्पनी में इंजीनियर के रूप में कार्य आरम्भ किया, 1888 में वे मुख्य कार्यपालक के पद पर पहुँच गए। उस समय कम्पनी दिवालियापन की स्थिति में थी, उन्होंने चुनौती स्वीकार की और प्रबंधकीय तकनीकों को लागू कर, शक्तिशाली वित्तीय पृष्ठभूमि प्रदान की। निम्न योगदानों के कारण, उन्हें 'साधारण प्रबंध' का जनक माना जाता है।

श्री फेयोल ने अपने कार्यकारी जीवन का प्रारम्भ एक फ्रांसीसी माइनिंग कम्बाइन में मुख्य अधिकारी के रूप में लम्बे समय तक किया तत्पश्चात वे फ्रांस के एक प्रसिद्ध उद्योगपति भी कहलाये। श्री फेयोल ने 14 सामान्य प्रशासनिक सिद्धान्तों की स्थापना की। उन्होंने इस सत्य को स्वीकार किया कि उनकी इस सफलता के पीछे अनेक व्यक्तिगत दृष्टिकोण ही नहीं थे बल्कि इस सफलता का कारण उन प्रबंधकीय विचारधाराओं का भी है जिनको उन्होंने सीखा और सामान्य कार्य दिवसों में प्रयोग किया। आइये फेयोल के सिद्धान्तों को समझने का प्रयास करें –

1. **कार्य विभाजन :–** कार्य को छोटे–छोटे भागों में बाँटकर, व्यक्तियों को उनकी योग्यता, क्षमता एवं अनुभवों के आधार पर दिया जाता है। बार–बार एक ही कार्य को करने से कर्मचारी उसमें विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, परिणामस्वरूप उसकी कार्यक्षमता एवं कुशलता बढ़ती है।
2. **अधिकार एवं दायित्व :–** अधिकार एवं उत्तरदायित्व सह–सम्बन्धित है। अधिकार का आशय निर्णय लेने की शक्ति से है तथा उत्तरदायित्व का आशय कार्य के सम्बन्ध में दायित्व से है।
3. **अनुशासन :–** अनुशासन के लिए सभी स्तरों पर अच्छे पर्यवेक्षकों, उचित एवं स्पष्ट नियमों एवं दण्ड के उचित उपयोग की आवश्यकता होती है। फेयोल के अनुसार, सभी स्तरों पर अनुशासन के लिए अच्छे अश्चिाशासियों की आवश्यकता होती है। उन्होंने उपक्रमों को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए कर्मचारियों के बीच अनुशासन पर बल दिया है तथा अनुशासन तोड़ने पर उन्हें दंड देने की सिफारिश की है।
4. **आदेश की एकता :–** एक कर्मचारी को समस्त आदेश एक ही अधिकारी से मिलने चाहिए। इससे यह लाभ होता है कि कर्मचारी एक ही अधिकारी के प्रति उत्तरदायी होता है। आदेश की एकता के अभाव में अनुशासन भंग होने की सम्भावना बनी रहती है तथा संगठन में भ्रान्ति का माहौल रहता है। अतः आदेश को एक ही अधिकारी से आना चाहिए जिससे कि कार्यो का सफल क्रियान्वयन संभव हो सके तथा अनुशासन बना रहे।
5. **निर्देश की एकता :–** यह सिद्धांत कार्य की एकता तथा समन्वय को सुनिश्चित करता है। इसके अनुसार समान गतिविधियों को एक ही समूह में रखना चाहिए तथा उनके कार्य की एक ही योजना होनी चाहिए।
6. **केन्द्रीय हित व्यक्तिगत हित के सवोपरि होना :–** सदस्यों के व्यक्तिगत हितों तथा संकीर्ण विचारों पर उपक्रम के सामूहिक तिहों को, इनको संदैव प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्तिगत स्वार्थ को, यदि वह उपक्रम के हित के विरूद्ध ले तो मान्यता

नहीं देनी चाहिए। उपक्रम तथा उसके सदस्यों की भलाई के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण निर्णय साबित होता है।

7. **कर्मचारियों का पारिश्रमिक :–** वेतन दिया जाना चाहिए जिससे वे सन्तुष्ट हो सके तथा अधिकतम कार्य कर सकें।
8. **केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीकरण :–** केन्द्रीयकरण के अन्तर्गत बमहत्वपूर्ण निर्णय उच्च प्रबंधकों द्वारा किए जाते हैं जबकि विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत निर्णय लेनेका अधिकार निम्न स्तर तक फैला होता है। इनके बीच उचित संतुलन होना चाहिए क्योंकि कोई भी संगठन पूर्णतया केन्द्रीकृत या विकेन्द्रीकृत नहीं हो सकता।
9. **पदाधिकारी सम्पर्क श्रृंखला :–** यह प्राधिकार की रेखा है जो आदेश की श्रृंखला तथा संदेशवाहन की श्रृंखला के रूप में कार्य करती है। उच्च स्तर से दिये गये निर्देश तथा आदेश मध्य स्तर के माध्यम से निम्न स्तर पर पहुँचते हैं। इस श्रृंखला का उपयोग करने से संगठन में आदेश की एकता आती है तथा दोहरे आदेशों के भ्रम से छुटकारा मिलता है।
10. **क्रम व्यवस्था :–** इस सिद्धांत के अनुसार सही कार्य पर सही व्यक्ति को होना चाहिए, इससे कार्यक्षमता तथा संसाधनों का प्रभावी उपयोग होता है।
11. **समता :–** कार्य करने में लगे सभी कर्मचारियों के साथ उचित व्यवहार करने को समता कहा जाता है। उचित व्यवहार का अर्थ है अधिकारी वर्ग द्वारा नर्मी तथा न्याय के साथ अधीनस्थों से व्यवहार करना जिससे वे अपने सौंपे गये कार्य को करने के लिए प्रेरित हो।
12. **कार्यकाल में स्थायित्व :–** इस सिद्धांत के अनुसार कर्मचारियों के कार्यकाल में स्थायित्व होना चाहिए। उन्हे बार–बार पद से नहीं हटाया जाना चाहिए तथा उन्हें कार्य की सुरक्षा का विश्वास दिलाया जाना चाहिए ताकि उनका अधिकतम योगदान मिल सके।
13. **पहल :–** पहल का आशय कोई कार्य किये जाने की आज्ञा लेने से पूर्व कुछ करने से लगाया जाता है। कर्मचारियों को सभी स्तरों पर सम्बन्धित कार्य के बारे में पहल करने की अनुमति होनी चाहिए। इससे वे प्रेरित एवं सन्तुष्ट होते हैं।
14. **संघीय शक्ति :–** संगठन की शक्ति उसकी एकता, सहयागे और एक सूत्र में बंधे रहने में ही है। यदि सभी एक सूत्र में बंधकर कार्य नहीं करेंगे तो संगठन शीघ्र ही बिखर जायेगा और सामान्य उद्देश्यों की उपलब्धि कदापि संभव नहीं होगी। इसके लिए आदेश में एकता, सहयोग तथा संघीय शक्ति की ताकत में अटूट विश्वास आवश्यक है।

फ्रेडरिक डब्ल्यू. टेलर का प्रबंध के सिद्धांत :–

एफ. डब्लू. टेलर (1856–1915) मिडवेल स्टील वर्क्स में कम समय में ही एक मशीन मैन से मुख्य अभियन्ता के पद तक पहुँचे (1878–1884)। उन्होंने यह जाना कि कर्मचारी अपनी क्षमता से कम कार्य कर रहे हैं तथा दोनों पक्षों प्रबंधकों एवं श्रमिकों की एक–दूसरे के प्रति नकारात्मक सोच है। इसलिए विभिन्न प्रयोगों के आधार पर उन्होंने ''वैज्ञानिक प्रबंध'' को विकसित किया। उन्होंने अंगूठे के नियम को अपनाने के बजाय वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित नियमों पर बल दिया। इसलिए उन्हें ''वैज्ञानिक प्रबंध का जनक'' माना जाता है।

वैज्ञानिक प्रबंध ठीक से यह जानने की कला है कि आप अपने कर्मचारियों से क्या करवाना चाहते हैं तथा वे कैसे कार्य को सर्वोत्तम एवं न्यूनतम लागत पर करते हैं।

सर्वप्रथम ब्रिटेन के विद्वान चार्ल्स बेवेज ने 1932 में अपनी पुस्तक **Economy of Manufacturers** में वैज्ञानिक प्रबंध शब्द का प्रयोग किया परन्तु वास्तव में वैज्ञानिक प्रबंध का मूल विकास अमेरिकन विद्वान एफ. डब्ल्यू. टेलर द्वारा 1911 में रचित पुस्तक **Principle of Scientific Management** में प्रस्तुत किया गया।

मैरी पार्कर फोलेट का प्रबंध के सिद्धांत :–

मैरी पार्कर फोलेट यू.एस.ए. की एक प्रसिद्ध सामाजिक, राजनैतिक दार्शनिक थी। उन्होंने समन्वय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और इस प्रक्रिया से संबंधित कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया, जो इस प्रकार है :–

1. **प्रत्यक्ष संपर्क :–** किसी भी प्रकार का समन्वय करने में प्रबंधकों व अन्य व्यक्तियों को एक दूसरे के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क करना चाहिए। उन्हें प्रबंधकों के द्वारा अपनाई जाने वाली पदानुक्रमिका को त्याग देना चाहिए। इससे देरी करने तथा अधिक समय लेने वाले संवहन की विधियों से छुटकारा मिल जाता है।

2. **प्रारम्भिक चरणों में ही समन्वय करना :–** कार्य शुरू होने के प्रारम्भ में ही समन्वयन कार्य को अपनाकर अंत तक उस पर कार्यान्वयन करने में निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है। अन्य शब्दों में प्रबंधक तथा निचले स्तर पर कार्यरत कर्मचारियों को कार्य प्रारम्भ होने के समय से ही समन्वय प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. **सभी कारकों के पारस्परिक संबंध :–** प्रत्येक संगठन व्यवस्था में उद्देश्य, कार्य प्रक्रियाएं, भूमिकाएं तथा सम्बन्ध आपस में जुड़े हुए होते हैं। संगठन के प्रत्येक भाग का आपस में गहरा संबंध होता है। विपरीत प्रक्रियाओं, निपुणता, व्यवहार तथा उपक्रम के सदस्यों के व्यवहार में एकरूपता लाना ही समन्वय है।
4. **समन्वयन की सतत् प्रक्रिया :–** समन्वयन न तो एक ही बार करने की प्रक्रिया है और न ही निर्धारित समय के पश्चात। यह तो एक सतत् प्रक्रिया है। प्रबंधकों को तो उपक्रम के कार्यो को सुचारू रूप से चलाने के लिए सदैव ही सतर्क रहना पड़ता है।
5. **परिस्थिति के अनुसार अधिकार :–** उपक्रमों में अधिकार के उद्देश्य को सही ढंग से समझने की आवश्यकता पर फोलेट ने बल दिया था। उनके अनुसार अधिकार का उद्देश्य अन्य व्यक्ति पर शासन नहीं होता। बल्कि इसका उद्देश्य तो उपक्रम के कार्यो में एकीकरण तथा सामंजस्य स्थापित करना होता है। विभिन्न परिस्थितियों को अपने ढंग से सुलझाने के लिए ही प्रबंधकों को अधिकार दिया जाता है। क्या करना है और कैसे करना है, परिस्थिति के अनुसार ही निर्णय लेना होता है। प्रबंधकों तथा अन्य व्यक्तियों को परिस्थितियों से ही आदेश लेना चाहिए, एक दूसरे से नहीं।

प्रबंध के सिद्धांतों की आवश्यकता एवं महत्व :–

प्रबंध के सिद्धांत प्रबंधकों के लिए अति महत्वपूर्ण होता है। उनके लिए यह सिद्धांत "लैम्प पोस्ट" का कार्य करते हैं इन्हीं के आधार पर वे अपने प्रबंध के कार्य को करने की कोशिश करते हैं इस प्रकार से प्रबंध के सिद्धांतों की आवश्यकता तथा महत्व निम्नलिखित हैं :–

1. कार्य कुशलता में वृद्धि
2. कार्य प्रणाली में विकास
3. प्रशिक्षण में सुविधा
4. सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति
5. जटिल समस्याओं का समाधान

1. **कार्य कुशलता में वृद्धि :–** प्रबंध के सिद्धांत के आधार पर प्रबंधक संस्था की समस्याओं का अच्छा समाधान ढूंढ सकता है। परिणाम स्वरूप संपूर्ण संस्था की कार्य कुशलता में वृद्धि होती है।
2. **कार्य प्रणाली में विकास :–** प्रबंध के सिद्धांत के आधार पर प्रबंधक अपनी समस्याओं तथा कार्यो के संबंध में सही दृष्टिकोण से विचार कर सकते हैं तथा कार्य प्रणाली का विकास कर सकते हैं।
3. **प्रशिक्षण में सुविधा :–** प्रबंध के सिद्धांत का विकास होने से प्रबंध का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया जा सकता है। जो संस्था के कार्य प्रणाली में सुधार के साथ संस्था के विकास के लिए आवश्यक होता है।
4. **सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति :–** प्रबंध के सिद्धांत के विकास एवं उपयोग से संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जा सकता है। इससे समाज के लोगों को अधिक संतुष्टि एवं अच्छा जीवन स्तर उपलब्ध होता है। परिणाम स्वरूप सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है।
5. **जटिल समस्याओं का समाधान :–** प्रबंध के सिद्धांत के विकास से जटिल समस्याओं का समाधान किया जा सकता है क्योंकि प्रबंध के सिद्धांत व्यवसाय के गतिशील वातावरण एवं इसके प्रभावों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

प्रबंधकों को वास्तविकता का उपयोगी सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करना :–

प्रबंध के सिद्धांत, प्रबंधकों को वास्तविक दुनियावी स्थिति में उपयोगी पैंठ कराते हैं। इन सिद्धांतों को अपनाने से उनके प्रबंधकीय स्थिति एवं परिस्थितियों के संबंध में ज्ञान, योग्यता एवं समझ में वृद्धि होगी। इससे प्रबंधक अपनी पिछली भूलों से कुछ सीखेगा तथा बार–बार उत्पन्न होने वाली समस्याओं को तेजी से हल कर समय की बचत करेगा। इस प्रकार प्रबंध के सिद्धांत, प्रबंध क्षमता में वृद्धि करते हैं उदाहरण के लिये, एक प्रबंधक दिन प्रतिदिन के निर्णय अधीनस्थों के लिए छोड़ सकता है तथा स्वयं विशिष्ट कार्यो को करेगा जिसके लिए उसकी अपनी विशेषज्ञता की आवश्यकता होगी। इसके लिए वह अधिकार अंतरण के सिद्धांत का पालन करेगा।

संसाधनों का अधिकतम उपयोग एवं प्रभावी प्रशासन :-

कंपनी को उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक दोनों संसाधन सीमित होते हैं। इनका अधिकतम उपयोग करना होता है। इनके अधिकतम उपयोग से अभिप्राय है, कि संसाधनों को इस प्रकार से उपयोग किया जाए कि उनसे कम से कम लागत पर अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। सिद्धांतों की सहायता से प्रबंधक अपने निर्णयों एवं कार्यों में कारण एवं परिणाम के संबंध का पूर्वानुमान लगा सकते हैं। इससे गलतियों से शिक्षा ग्रहण करने की नीति में होने वाली क्षति से बचा जा सकता है। प्रभावी प्रशासन के लिए प्रबंधकीय व्यवहार का व्यक्तिकरण आवश्यक है जिससे कि प्रबंधकीय अधिकारों का सुविधानुसार उपयोग किया जा सके। प्रबंध के सिद्धांत, प्रबंध में स्वेच्छाचार की सीमा निर्धारित करते हैं जिससे कि प्रबंधकों के निर्णय व्यक्तिगत पंसद एवं पक्षपात से मुक्त रहें। उदाहरण के लिए, विभिन्न विभागों के लिए वार्षिक बजट के निर्धारण में प्रबंधकों द्वारा निर्णय उनकी व्यक्तिगत पंसद पर निर्भर करने के स्थान पर संगठन के उद्देश्यों के प्रति योगदान के सिद्धांत पर आधारित होते हैं।

वैज्ञानिक निर्णय :-

निर्णय, निर्धारित उद्देश्यों के रूप में विचारणीय एवं न्यायोचित तथ्यों पर आधारित होने चाहिएँ। यह समयानुकूल, वास्तविक एवं मापन तथा मूल्यांकन के योग्य होने चाहिएँ। प्रबंध के सिद्धांत विचारपूर्ण निर्णय लेने में सहायक होने चाहिए। हाँ तर्क पर जोर देते हैं न कि आँख मूंदकर विश्वास करने पर। प्रबंध के जिन निर्णयों को सिद्धांतों के आधार पर लिया जाता है, वह व्यक्तिगत द्वेष भावना तथा पक्षपात से मुक्त होते हैं। यह परिस्थिति के तर्कसंगत मूल्यांकन पर आधारित होते हैं।

बदलती पर्यावरण की आवश्यकताओं को पूरा करना :-

सिद्धांत यद्यपि सामान्य दिशा निर्देश प्रकृति के होते हैं तथापि इनमें परिवर्तन होता रहता है, जिससे यह प्रबंधकों की पर्यावरण पर बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होते हैं। आप पढ़ चुके हैं कि प्रबंध के सिद्धांत लोचपूर्ण होते हैं, जो गतिशील व्यावसायिक पर्यावरण के अनुरुप ढाले जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्रबंध के सिद्धांत श्रम–विभाजन एवं विशिष्टीकरण को बढ़ावा देते हैं। आधुनिक समय में यह सिद्धांत सभी प्रकार के व्यवसायों पर लागू होते हैं। कंपनियाँ अपने मूल कार्य में विशिष्टता प्राप्त कर रही हैं तथा अन्य व्यावसायिक कार्यों को छोड़ रही हैं। इस संदर्भ में हिन्दुस्तान लीवर लि– के निर्णय का उदाहरण ले सकते हैं जिसने अपने मूलकार्य से अलग रसायन एवं बीज के व्यवसाय को छोड़ दिया है। कुछ कंपनियाँ गैर मूल कार्य जैसे शेयर हस्तांतरण प्रबंध एवं विज्ञापन को बाहर की एजेंसियों से करा रही हैं। यहाँ तक कि आज अनुसंधान एवं विकास, विनिर्माण एवं विपणन जैसे मूल कार्यों को भी बाहर अन्य इकाइयों से कराया जा रहा है। अपने व्यावसायिक प्रक्रिया बाह्य स्रोतीकरण एवं ज्ञान प्रक्रिया बाह्य स्रोतीकरण में बढ़ोतरी के संबंध में तो सुना ही होगा।

सामाजिक उत्तरदायत्वों को पूरा करना :-

जनसाधारण में बढ़ती जागरुकता व्यवसायों विशेषत सीमित दायित्व कंपनियों, को अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए बाध्यकारी रही हैं। प्रबंध के सिद्धांत एवं प्रबंध विषय का ज्ञान इस प्रकार की माँगों के परिणामस्वरूप ही विकसित हुआ है। तथा समय के साथ–साथ सिद्धांतों की व्याख्या से इनके नए एवं समकालीन अर्थ निकल रहे हैं। इसीलिए यदि आज कोई समता की बात करता है, तो यह मजदूरी के संबंध में ही नहीं होती। ग्राहक के लिए मूल्यवान, पर्यावरण का ध्यान रखना, व्यवसाय के सहयोगियों से व्यवहार पर भी यह सिद्धांत लागू होता है। जब इस सिद्धांत को लागू किया जाता है, तो हम पाते हैं कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने पूरे शहरों का विकास किया है, जैसे भेल (बीएचईएल) ने हरिद्वार (उत्तराखंड) में रानीपुर का विकास किया है। श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ का भी उदाहरण दिया जा सकता है।

प्रबंध प्रशिक्षण, शिक्षा एवं अनुसंधान :-

प्रबंध के सिद्धांत प्रबंध विषय के ज्ञान का मूलाधार हैं। इनका उपयोग प्रबंध के प्रशिक्षण, शिक्षा एवं अनुसंधान के आधार के रूप में किया जाता है। आप अवश्य जानते होंगे कि प्रबंध संस्थानों में प्रवेश के पूर्व प्रबंध की परीक्षा ली जाती है। क्या आप समझते हैं कि इन परीक्षाओं का विकास बिना प्रबंध के सिद्धांतों की समझ एवं इनको विभिन्न परिस्थितियों में कैसे उपयोग किया जा सकता है, को जाने बिना किया जा सकता है। यह सिद्धांत प्रबंध को एक शास्त्र के

रूप में विकसित करने का प्रारंभिक आधार तैयार करते हैं। पेशेवर विषय जैसे कि एम–बी–ए– (मास्टर अ०फ बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन) बी–बी–ए– (बैचलर अ०फ बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन) में भी प्रारंभिक स्तर के पाठ्यक्रम के भाग के रूप में इन सिद्धांतों को पढ़ाया जाता है।

यह सिद्धांत भी प्रबंध में विशिष्टता लाते हैं एवं प्रबंध की नयी तकनीकों के विकास में सहायक होते हैं। हम देखते हैं कि परिचालन अनुसंधान, लागत लेखांकन, समय पर, कैनबन एवं केजन जैसे तकनीकों का विकास इन सिद्धांतों में और अधिक अनुसंधान के कारण हुआ है।

1. **प्रबंधकों को वास्तविकता का उपयोगी सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करना :–** प्रबंधक के सिद्धांत विवेकपूर्ण तरीके से प्रबंध्कीय निर्णय लेने एवं इनका क्रियान्वयन करने में मार्गदर्शन करते हैं, यह प्रबंधकों को अन्तर्दृष्टि प्रदान कर, समस्याओं को समझने म सहायत करते हैं तथा प्रबंधकीय कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं।
2. **संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग :–** प्रबंध के सिद्धांत मानवीय एवं भौतिक संसाधनों में समन्वय प्रदान करते हुए इनका अनुकूलतम उपयोग संभव बनाते हैं।
3. **वैज्ञानिक निर्णय :–** प्रबंधकीय सिद्धान्तों पर आधारित निर्णय वास्तविक संतुलित एवं समुचित होते हैं।
4. परिवर्तनशील वातावरण की आवश्यकताओं को संतुष्ट करना प्रबंधकीय सिद्धांत प्रभावपूर्ण नेतृत्व द्वारा तकनीकी परिवर्तनों को अपनाने में सहायक होते हैं।
5. **सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करना :–**प्रबंध क सिद्धान्तों व्यावसायिक उद्देय के साथ–साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने मार्गदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, समानता एवं कर्मचारियों के पारिश्रमिक का सिद्धांत।
6. **प्रबंधकीय प्रशिक्षण, शिक्षा, शोध :–** प्रबंध के सिद्धांत प्रबंधकीय अध्ययन में अनुसंधान और विकास करने के लिए आधार के रूप में कार्य करते हैं।

निष्कर्ष :–

प्रबंध के सिद्धांतों का महत्त्व उनकी उपयोगिता के कारण है। यह प्रबंध के व्यवहार का उपयोगी सूक्ष्म ज्ञान देता है एवं प्रबंधकीय आचरण को प्रभावित करता है। प्रबंधक इन सिद्धांतों को अपने दायित्व एवं उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए उपयोग में ला सकते हैं। आप यह तो मानेंगे कि प्रत्येक सारगर्भित चीज निहित सिद्धांत के द्वारा शासित होती है। खसिद्धांत प्रंबंधकों को निर्णय लेने एवं उनको लागू करने में मार्गदर्शन करते हैं।, प्रबंध के सिद्धांतकार का प्रयत्न सदा निहित सिद्धांतों की खोज करना रहा है तथा रहना भी चाहिए जिससे कि इन्हें दोहराई जा रही परिस्थितियों में स्वभाविक रूप से प्रबंध के लिए उपयोग में लाया जा सके।

सन्दर्भ गन्थ सूची :–

1. नवभारत पत्रिका 2018
2. बीबीसी हिन्दी. जून 2017
3- www.google.com/wikipedia.com
4- www.wikipedia.com